पवित्रता... आपकी पर्सनैलिटी

आज भिन्न-भिन्न जाति, धर्म, रंग होते हुए भी एक बात से सभी सहमत हैं चाहे वो धर्मसत्ता हो चाहे कोई और। चारों ओर दुःख-अशांति, प्राकृतिक आपदाओं के माहौल के मध्य भी सबकी अंगुली ऊपर की ओर जाती और कहते कि 'हे ऊपर वाले बचाओ'। सब एक बात से तो सहमत हैं कि कोई न कोई सर्वोच्च सत्ता है जिससे हम सबका कहीं न कहीं रिश्ता-नाता है। और हमारे जीवन की सम्पूर्ण आवश्यकताएं उसी ने ही पूरी की हैं। तब तो सबका सिर ऊँचा होता और पुकारते कि अब बहुत हो गया! अब इस धरा पर आ जाओ और हमें सही राह दिखाकर चैन की दुनिया में ले चलो।

अगर वो आ भी जायेगा तो हमें क्या देगा? क्या शिक्षा देगा जिससे हमारे जीवन में सुख और शांति लौट आये? विशेष बात आज हम जो दुःखी हैं, उसका मूल कारण ढूंढने से पता चलता है कि कहीं न कहीं हमारे जीवनशैली में, परस्पर सम्बंधों में, व्यवहार में अशुद्धि की छाया व्याप्त है।

हम सभी की यह चाह है कि इसमें परिवर्तन हो, बदलाव हो। पर बदलाव कैसे होगा, वहां आकर हम सभी रुक जाते। क्योंकि मनुष्य मात्र का यह कार्य रहा ही नहीं। अगर मनुष्य यह कार्य कर सकता तो हमें ऊपर वाले की याद ही क्यों आती! हमने शास्त्रों में भी पढ़ा है, 'सुख-शांति की जननी पवित्रता है'। आज हर कोई सुख, शांति, खुशी की चाह रखता है पर हमारे जीवन में इसका स्थायित्व कैसे हो, ये नहीं जानते। पर जैसे कहा कि जहाँ पवित्रता और शुद्धता है वहां परमात्मा का वास है। सब कोई सुख, शांति, आनंद, प्रेम मांगता, पर कोई ये नहीं मांगता कि हमारे जीवन में पवित्रता हो। जबकि पवित्रता बिना न प्यार है, न प्रेम है, न शांति।

आज हम अशांति और दुःख के कारण को जड़ से समाप्त करना तो चाहते हैं पर पवित्रता को अपनाने में हमें कठिनाई महसूस होती है। क्योंकि हमारे सामने कोई ऐसा आदर्श नहीं है जहाँ पवित्रता भी हो और जीवनचर्या भी हो। और शर्त ये है कि पवित्रता है तो बाकी सब कुछ है। इसीलिए परमात्मा शिव की इस धरा पर आवश्यकता है ताकि हमें सही व श्रेष्ठ जीवनचर्या का वर दें। और हमें जागृत करें कि पवित्रता का महत्त्व हमारे जीवन में कितना है! पवित्रता से ही जीवन में प्रसन्नता रहती है। बिना पवित्रता प्रसन्नता नहीं। पवित्रता से प्रभु का प्यार भी है और प्रभु का दिया हमें उपहार भी।

आप सोचें, कोई भी महान व्यक्ति व देवी-देवताओं के पास जाते हैं, उनके चित्र देखते हैं तो उनके चेहरे से हमारे चेहरे में भिन्नता महसूस होती है। एक घड़ी भी आप देवी-देवता के चित्र या मूर्ति को ही देखें तो आपको लगेगा कि उनके चेहरे में जो मधुर स्मित की खुशबू है वो हमारे में नज़र नहीं आती। यानी कि हमारे मन में उलझन है, प्रश्न है, इच्छायें हैं, ईर्ष्या है, कहीं न कहीं अप्राप्तियां हैं। तभी तो मन में प्रश्न उठता ही रहता है और मन की बेचैनी बनी ही रहती। तो सभी प्रश्नों का हल, सभी समस्याओं का समाधान, अशांति के कारण, दुःख का हल अगर एक शब्द में बांधें तो वो है पवित्रता। परमात्मा शिव जब इस धरा पर आते हैं तो सबसे पहले सर्व आत्माओं को पवित्रता का वर देते हैं और स्मृति दिलाते हैं, याद दिलाते हैं, आप सबका निज-स्वरूप पवित्रता है। समय चलते भिन्न-भिन्न आकर्षण, इच्छायें व भोग के वश आपकी पवित्रता का बल लगभग पूरा ही समाप्त हो चुका। जब अपनी चीज़ गुम हो जाती तो बेचैनी होती है ना! और जहाँ बेचैनी है वहां शांति, सुख नहीं भासता। आज हम आपको यही बताना चाहते हैं कि हम अपने जीवन में पवित्रता के महत्त्व को जानेंगे, समझेंगे और जीवन में उतारेंगे तो सुख, शांति और समृद्धि परछाई की तरह आपके साथ रहेगी, कभी भी अलग नहीं होगी। 2023 की शिवरात्रि विशेष रूप में खास है, क्योंकि परमात्मा हमें सबकुछ देने भी आया है और यह संदेश भी लाया कि, बहुत हो गया अब, बच्चे बहुत हो गया। अब, खेल समाप्त हो रहा, अब चलो अपने घर। पवित्रता अपनाओ, सुख-शांति पाओ। अब आप क्या चाहते हैं, ये आप पर छोड़ते हैं...।

ड्रामा का फुलस्टॉप लगाकर बुद्धि को डिस्टर्ब न होने दें

बुद्धि के अभिमान का त्याग, सेवा का त्याग, साथियों का त्याग, अंदर से हुआ पड़ा हो। लेकिन कोई त्यागी माना वैरागी नहीं है। हम आपस में इतने प्यारे भी हैं। बाबा ने कहा है कि हम अकेले आये, अकेले जाना है...लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि हम अकेले मौज करें। यह भी ठीक नहीं। परिवार भी साथ में है। बाबा का बच्चों से प्यार कितना है। कितना प्यार से बाबा आते, हम बच्चों को सजाते, हम बच्चों का भी फिर इतना ही बाबा से प्यार है, इसमें बाबा सर्टिफिकेट देते हैं। मुरली से, सेवा से तो नम्बरवन प्यार है, लेकिन धारणाओं से भी नम्बरवन प्यार हो। सामने देखने वाले हमारी धारणाओं को देखते हैं। तो धारणा भी नम्बरवन चाहिए। हम सभी की पहली धारणा है-पावन बनना। काम महाशत्रु पर विजय प्राप्त करना। बाबा के सिवाए कोई यह दावा नहीं करता कि मैं आया हूँ तुम बच्चों को पावन बनाने। अगर इसी सब्जेक्ट में आप नम्बरवन विजयी हो तो आप सबसे महान हो। इसके लिए दृष्टि, वृत्ति, वायब्रेशन, व्यवहार सबमें बिल्कुल पावन बनो। ऐसे पावन रहो

जो दूसरों को भी पावन बनने की प्रेरणा मिल जाए। इसी में ही माया आती।

नीति में प्रीति रखो। नियम-संयम को जीवन का श्रृंगार समझो। मर्यादायें हमारे संगमयुग का ताज हैं। जितना उसमें रहो उतना सेफ रहेंगे।

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

इसी माया को जीतना ही मायाजीत बनना है। कई बार हम आप सबका दिल से यह गुण गाती कि आपने एक बाबा से वायदा रखा है कि मेरा तो एक बाबा दूसरा न कोई। दिल में बाबा को बसाया है। परंतु जब कोई कहाँ थोड़ा भी किसी की अटैचमेंट में आते तो 5 मंज़िल से नीचे गिर पड़ते। जब कोई 5वीं मंज़िल से गिरता है तो रहम पड़ता, तरस पड़ता है, इसके लिए मर्यादाओं को सदा साथ रखो। बाबा ने हम सबको ज्ञान दिया है कि हम आत्मायें भाई-भाई हैं। परंतु यह नॉलेज है कि आत्मा भाई है, दृष्टि भाई की हो लेकिन व्यवहार भाई-बहन का हो। ऐसे नहीं बहन को कहो- आओ भाई जी। व्यवहार में ईश्वरीय मर्यादाओं का नियम रखना पड़ता। अगर नियमों में पक्के रहो तो कभी 5वीं मंज़िल से नहीं गिरेंगे। अगर कोई गिरता है तो पहले मर्यादा का किसी-न-किसी प्रकार से उल्लंघन करता है। वैसे तो बाबा ने हमें बहुत रमणीक गुह्य ज्ञान दिया है, हम उसी में मस्त रहें। लेकिन यह परिवार है, परिवार में हम सभी मिलकर रहते हैं, यह क्लास है। क्लास में एक तरफ भाई, दूसरी तरफ बहनें बैठती, यह भी मर्यादा है। बाबा कहते-आपस में रूहरिहान करो तो यह रूहरिहान क्लास के लिए दी गई है। ऐसे नहीं हम अकेले में बैठकर रूहरिहान करें। माया देखती रहती है कि कहाँ से खिड़की खुली हुई है, उसी जगह से वह प्रवेश करती है। तो माया को आने का मौका न दो क्योंकि अकेले में बैठकर रूहरिहान करेंगे तो थोड़ी-थोड़ी दिल की लेन-देन शुरू हो जायेगी। ऐसे में माया अंदर घुस जायेगी। यह है माया का दरवाज़ा इसलिए नीति में प्रीति रखो। नियम-संयम को जीवन का श्रृंगार समझो। मर्यादायें हमारे संगमयुग का ताज हैं। जितना उसमें रहो उतना सेफ रहेंगे। बाबा ने कभी एक साथ टेबल पर बैठकर भाइयों को खाने की छुट्टी नहीं दी, टेबल पर हँसी-मज़ाक करने की छुट्टी नहीं दी। यह छोटी-छोटी बातें भी ध्यान पर रखना बहुत ज़रूरी है। भल हम आत्मा भाई-भाई हैं, नॉलेज है हम बिन्दु हैं लेकिन नॉलेज के साथ मर्यादायें भी रखना ज़रूरी है।

अपनी स्व-स्थिति की उन्नति का आधार है ड्रामा। ड्रामा कहा माना फुलस्टॉप आया। एक सेकण्ड बीता फुलस्टॉप। यह ऐसी नॉलेज है जो अपने को सदा निश्चिंत रख सकते हैं। ड्रामा की नॉलेज ही हमें निर्मोही बनाती है। हर एक का अपना-अपना पार्ट है, इसलिए किसी के पार्ट से फीलिंग नहीं आती। हरेक की अपनी विशेषता है, अपनी खूबी है। वह गुण देखो, विशेषता देखो तो संस्कार नहीं टकरायेंगे। जो कई बार थोड़ा संस्कारों का टक्कर होता, बुद्धि डिस्टर्ब होती– ड्रामा का फुलस्टॉप लगाकर अपनी बुद्धि को डिस्टर्ब होने मत दो।

अनुभवी बनकर वातावरण को शक्ति दो...

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

एक है सोचना, एक है अनुभव करना। तो यह अपने से पूछो मुझे आत्मा का अनुभव है? अभी इस बात के अनुभवी बनने का अभ्यासी बनो, बाबा भी कहते इसकी थोड़ी कमी है। अगर अनुभव हो जाये तो वो भूलता नहीं है। बाबा कहते नॉलेजफुल बहुत हैं लेकिन अनुभवीमूर्त नहीं। तो जो भी प्रॉब्लम्स हैं वो कर्म का ही सूक्ष्म रूप हैं, संस्कार का ही परिणाम सामने आता है। इसीलिए बाबा समय प्रति समय हमको आत्म-अभिमानी स्थिति का अनुभव करने के लिए कहता है। ट्रैफिक कंट्रोल करो, माना संकल्पों की ट्रैफिक बंद करके साइलेंस स्वरूप की स्मृति में रहो। साइलेंस स्वरूप तो आत्मा ही है। ऐसे समय व्यर्थ व साधारण संकल्प की तो बात ही नहीं है। अभी बाबा ने 8 बारी ड्रिल की बात कही, वो इसीलिए कहा कि बीच-बीच में बार-बार यह अभ्यास करते रहने से लिंक जुटा रहता है जिससे निरंतर साइलेंस स्वरूप आत्मा का नशा(स्थिति) रहे क्योंकि लिंक टूटा फिर जोड़ा तो इसमें मेहनत भी लगेगी, टाइम भी लगेगा। तो चेक करते रहो और चेंज करते रहो। योग किया या युद्ध किया, यह तो खुद को ही पता पड़ता है। मन के अंदर की गति(स्थिति) क्या है, वो हम ही जानते हैं क्योंकि आत्म-अभिमानी नहीं या मन के ऊपर कंट्रोल नहीं तो हमारा वायदा क्या है? मनजीते जगतजीत कैसे बनेंगे! मायाजीत कैसे बनेंगे! तो जितना समय चाहे मन कंट्रोल में रहे, यह प्रैक्टिस बहुत चाहिए। कर्म-कॉन्सेस की जगह सोल-कॉन्सेस की स्थिति हो।

मन को विन करो तो वन नम्बर में आ जायेंगे। मन की मालिक आत्मा है, तो मन के मालिक बनो तब कर्मेन्द्रियाँ ऑर्डर मानेंगी। तो मैं आत्मा मालिक हूँ, यह स्मृति पक्की हो जाये, नहीं तो वही पुराने संस्कार प्रकट होते रहेंगे, बार-बार धोखा खाते रहेंगे, परेशान होते रहेंगे। तो मतलब अमृतवेले योग का महत्त्व अनुभव में हो। अमृतवेले से लेकर बाबा मेरे लिए आता है, हमारा टीचर हमारे लिए आता है, बाबा वाणी सुनाने हमारे लिए आता है, खास हमारे को पढ़ा रहा है, ऐसे स्वयं को एक योग्य स्टूडेंट समझ करके बैठो। अभी एक सेकण्ड में मैं आत्मा हूँ, उस अनुभूति में रहो...और कुछ नहीं सोचना...।

तो सभी ने अनुभव किया या युद्ध की? इसके लिए रोज़ कोई-न-कोई स्वमान स्मृति में रखो और उसको चेक करो तो अनुभवी मूर्त बनना है। जो हम कहते हैं, उसके अनुभव में रहें। परमात्मा ही हमारा सब कुछ है, यह अनुभव है? तो अनुभवी मूर्त बनेगी तो सब समस्यायें खत्म हो जायेंगी क्योंकि मालिक बन गये, करनकरावनहार बन गये, तो वो वायब्रेशन वायुमण्डल को पॉवरफुल बनाता है। ऐसे शक्तिशाली वायुमण्डल में जो भी स्टूडेंट आयेंगे उन्हें भी मदद मिलेगी फिर आपका सेंटर देखो कितना उन्नति को पाता है। तो खुद अनुभवी बनके वातावरण को अनुभव की शक्ति दो, स्टूडेंट को हिम्मत दिलाओ अनुभव की।

नियम-मर्यादाओं के प्रतिकूल चलते तो खुशी नहीं होगी

राजयोगिनी दादी जानकी जी

बाबा हम बच्चों को शक्ति भी देता है, खुशी भी देता है। पहले खुश रहने की शक्ति देता है इसलिए सदा खुश। कोई भी ऐसी घड़ी, मिनट नहीं है जो खुश न हो। कारण कुछ है ही नहीं, अगर कारण आता भी है तो देखने के लिए कि यह कहाँ तक खुश है? क्योंकि जब से बाबा के बने हैं, बाबा से खुशी मिली है तब तो बाबा के पास बैठे हैं। सेवा भी करते हैं, खुशी मिलती है। अगर मैं एक सब्जेक्ट में भी वीक हूँ तो खुशी नहीं होगी। योग कम होगा तो खुशी नहीं होगी। धारणा में कोई कमी होगी, जो हमारे नियम मर्यादायें बने हुए हैं, उसके अनुकूल अगर नहीं चलते हैं, कुछ भी मिस किया है तो खुशी नहीं होगी। भले सेवा करेंगे क्योंकि सेवा तो चलते-फिरते कोई न कोई सेवा सामने है पर अन्दर खुशी नहीं है।

ज्ञान क्या कहता है? योग अच्छा हो। ज्ञान है, हे आत्मा अपने को आत्मा समझ परमात्मा बाप को याद करो, बस यह है योग। मैं रिअली आत्मा हूँ... देह के भान से परे। देह, दुनिया यहाँ है, जहाँ रावण का राज्य था अभी हम उस राज्य से निकल आये हैं। बाबा ने वहाँ से निकाल लिया है स्व पर राज्य करने के लिए। स्वयं का स्व पर राज्य है, ईश्वर के बच्चे हैं पर सेवाधारी भी हैं। बाबा ने इतनी अच्छी पुरुषार्थ की सहज विधि सिखाई है कि बीती को चितवो नहीं, आगे की रखो न आश, तो फ्री हो गये। वर्तमान में हैं तो कहेंगे बहुत अच्छा है।

बाबा कितना अच्छा रहमदिल है, फ्राकदिल है, एक ही टाइम में कहता है याद में रहो, योग माना कनेक्शन से माइट मिल जाती है। याद में अचल-अडोल हैं, कोई चिंता व फिकर नहीं, यह अपना अटेन्शन रखना पड़ता है। और योग में बाप, टीचर, सतगुरु वन्डरफुल है। बाबा के हरेक महावाक्यों में बड़ा अर्थ समाया हुआ है। याद में रहो तो विकर्म विनाश होंगे। अभी बाबा का बनने के बाद विकर्माजीत, कोई भूल-चूक करके फिर से विकर्म नहीं करो। फिर भी बाबा कहता है अगर भूल की हो तो बाबा को सच-सच बताओ। बाबा माफ करने में बहुत होशियार है। अगर मैं सच्ची दिल से बात न करूँ, रियलाइज़ न करूँ ना, तो बाबा सजायें भी देता है, सकाश भी देता है, याद भी देता है इसलिए कर्म में सावधान रहना है।